Volume - II

ISSN 2349-638x
Impact Factor 5.707

|| श्रम एव जयते ||

दे.भ.बा.भा.खंजिरे शिक्षण संस्था संचलित

नाईट कॉलेज ऑफ आर्ट् अँड कॉमर्स, इचलकरंजी

तहसील हातकणंगले, जिला कोल्हापूर

एक दिवसीय

राष्ट्रीय संगोष्ठी

विषय

इक्कीसवीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में चित्रित विविध विमर्श (सन् 2010 से अब तक)

07 Dec. 2019

संपादक
डॉ.माधव राजप्पा मुंडकर

Scanned by CamScanner

No part of this Special Issue shall be copied, reproduced or transmitted in any form or any means, such as Printed material, CD – DVD / Audio / Video Cassettes or Electronic / Mechanical, inducing photo, copying, recording or by any information storage and retrieval system, at any portal, website etc; Without prior permission.

SPECIAL ISSUE PUBLISHED BY
Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638x Peer Review and Indexed
Impact Factor 5.707
Special Issue No. 59

Disclaimer

Research papers published in this Special Issue are the intellectual contribution done by the authors. Authors are solely responsible for their published work in this special Issue and the Editor of this special Issue are not responsible in any form.

Scanned by CamScanner

Sr. No.	Name of the Author	Title of the Paper	Page No.
31	प्रा.डॉ. शेख मुखत्यार शेख वहाब	दलित चेतना के परिदृश्य में 'सूअरदान'	209
	प्रवासी भारतीय साहित्य विमर्श		
32	डॉ. बी. संतोषी कुमारी	सूर्यबाला कृत कौन देस को वासी : वेणु की डायरी में चित्रित सामाजिक जीवन और संघर्ष	212
33	डॉ. गोरखनाथ किर्दंत	प्रवासी साहित्य में भारतीय संस्कृति	219
34	प्रा.एस.के.आतार	प्रवासी स्त्री समस्याओं की यथार्थ कहानी : स्विमिंग पूल	221
35	श्याम कुमार दास	२१ वीं सदी के काव्य में प्रवासी भारतीय साहित्य विमर्श	223
36	डॉ.युवराज माने	मनोव्यस्था खंडकाव्य में व्यक्त विचार	226
	आदिवासी, किन्नर विमर्श, भूमंडलिकरण		
37	डॉ.विठ्ठल शंकर नाईक	आदिवासी नारी समाज की व्यथागाथा 'अल्मा कबुतरी'	229
38	रोहिता केतन राऊत	२१ वी सदी की हिंदी उपन्यांसो में वर्णित किन्नर विमर्श	233
39	प्रा.डॉ.सौ. शकंतुला प्रताप वाघ	किन्नर विमर्श	236
40	प्रा.डॉ. बी.एस बलवंत	मधु कांकरिया की कहानी में भूमंडलिकरण (लोड शेडिंग के संदर्भ में)	237

Scanned by CamScanner

प्रवासी साहित्य में भारतीय संस्कृति

डॉ. गोरखनाथ द्विवेदी
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय,
इस्लामपुर

आज विश्व के सभी प्रमुख देशों में प्रवासी भारतीय हैं। अमरिका, इग्लैंड, जर्मनी, हालैंड, न्यूजीलैंड, फ्रान्स, कनाडा आदि देशों में शिक्षा, चिकित्सा, अभियांत्रिकी आदि क्षेत्रों में विशेषज्ञ के रूप में हो, या व्यवसाय हेतु गए हो, सुरीनाम, फिजी, मॉरिशस त्रिनिदाद ब्रिटीश गयाना में शर्तबंदी प्रथा के अंतर्गत उनके खेतों में गिरमिटिया मजदूरों के रूप में। भारतीय मूल के नागरिक पूरे विश्व में फैले हैं। इन्होंने विदोशों को अपनी कर्मभूमी बनाया है। उनके द्वारा लिखा गया साहित्य ही प्रवासी भारतीय साहित्य है। प्रवासी भारतीय जो संवेदनशील थे उन्होंने अपनी समस्याओं, अपने आस-पास घटित घटनाओं, विचारों, दृष्टिकोण तथा मान्यताओं को साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया। पराई भूमि में अपनी अस्मिता को सहेजने का प्रयास किया।

हिंदी साहित्य में प्रवासी साहित्य का वैचारिक प्रारंभ प्रेमचंद की कहानी 'ये मेरी जन्मभूमि' (१९०३) से माना जा सकता है। इनकी एक अन्य कहानी 'शुद्रा' भी मॉरीशस के गिरमिटिया मजदूरों के जीवन पर आधारित है। पं. तोताराम १९६३ में शर्तबंदी मजदूर की तरह फिजी गए तथा २१ वर्ष के बाद भारत लौटकर 'फिजी द्वीप में मेरे इक्कीस वर्ष' (१९१५) नामक कहानी लिखी जिसने भारत के प्रबुध्द वर्ग का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया।

प्रवासी साहित्य का उद्भव भारतीय प्रवासी नाम से हुआ जो इंडियन डायस्पोरा का हिंदी रूपांतर है। डायस्पोरा का अर्थ है वह बिखरी हुई आबादी जो अलग-अलग क्षत्रों में जा बसती है। बीसवीं शताब्दी में विदेश गमन करने वाले लोगों की संख्या काफी बढ़ गई। इसके साथ ही प्रवासी भारतीयों ने साहित्य के माध्यम से भारतीयता की अस्मिता को सुरक्षित रखने की कोशिश की है। इनमें अभिमन्यू अनंत, रामदेव धुरंधर, सुधा ओम ढ़ींगरा, अंजना संधीर, इला प्रसाद, उषादेवी कोल्हटकर, राजश्री, वेदप्रकाश 'बटुक' श्यामनारायण शुक्ल, सुषम देवी, मिश्रीलाल जैन, सुदर्शन प्रियदर्शिनी, सुरेंद्रनाथ तिवारी, नरेश भारतीय, निखिल कौशिक, उषा प्रियंवदा, उषा राजे सक्सेना, कृष्ण कुमार, अचला शर्मा, नीला पॉल, सुमनकुमार घई, अश्विन गाँधी, अनिल जनविजय आदी प्रमुख साहित्यकार हैं।

प्रवासी भारतीय जो संवेदनशील थे उन्होंने विदेश में अपने प्रवास के दौरान परिवेश से व परिस्थितियों से प्रभावित होकर अलग-अलग विषयों में साहित्य की रचना की। यही से प्रवासी हिंदी साहित्य का अरंभ हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भारी संख्या में विकसनशील और अविकसित देशों में शिक्षित और अशिक्षित परिवार के लोग विकसित देशों की ओर पलायन कर चुके हैं। इसी शृंखला में बहुत सारे परिवार भारतीय उपमहाद्वीप से प्रवासी बनकर आये; कुछ पूरब से कुछ पश्चिम से शरणार्थी बनकर पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति के मुक्ति पर आधारित दर्शन और सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों की धरती पर प्रतिरोपित भारतीय समुदाय को जो धक्का पहुँचा उसका चित्रण भारतीय मूल के हिंदी साहित्यकारों ने किया है। समाज के विभिन्न क्षत्रों में शिक्षा, व्यवसाय, लोकसेवा, धार्मिक संस्थानों मे विषेशकर महिलाओं की योग्यता के आधार पर पुरूषों से बराबरी के अधिकार माँगने की प्रकिया एवं आंदोलन चल पड़ा। यह खूली सोच एवं उदारवाद और आजादी के अधिकार की माँग से प्रभावित होता रहा है। प्रवासी हिंदी लेखक अपने लेखन के माध्यम से देश-विदेश की संस्कृति के बीच समन्वय का काम करते हैं। प्रवासी हिंदी लेखक भारतीय होने के कारण वे एक तरफ हिंदी प्रचार-प्रसार विदोशों में कर रहे हैं, वही दूसरी ओर भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता से भी वहाँ के लोगों का परिचय करवा रहे हैं। हिंदी की अंतराष्ट्रीय पहचान बनाने में प्रवासी हिंदी रचनाकारों का योगदान महत्वपूर्ण है।

डॉ. रामदरश मिश्र के अनुसार "प्रवासी साहित्य ने हिंदी को नई जमीन दी है और हमारे साहित्य का दायरा ललित विमर्श और स्त्री विमर्श की तरह विस्तृत किया है।" अभिमन्यू अनंत के साहित्य में इसकी झलक देखने को मिलती है। इनके उपन्यास, कहानी और कविताओं में भारतीय संस्कृति की समन्वयवादी प्रवृत्ती , सदाचार, संयम, त्याग, समाज कल्याण और विश्व बंधुत्व की भावना दृष्टिगत होती है। अभिमनयू अनंत ने 'गांधी जी बोले थे' उपन्यास में सत्य का प्रयोग स्थिति, घटना चिंतन आदि के रूप में किया है। 'लाल पसीना' उपन्यास के स्वामी जी सत्य की प्रतिमूर्ति हैं। वे गाँव के लोगों को उनकी निर्धनता, शोषण, विवशता और बेवसी का अहसास दिलाते हैं। साथ ही अपने चारों ओर फैले अज्ञान के घने अंधेरे को दूर करने की प्रेरणा भी देते हैं। 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में पक्षपाती इतिहास का विरोध करते हुए मजदूरों की संघर्ष गाथा और इमानदारी से लिखे इतिहास की माँग करते हैं। 'शेफाली' उपन्यास की नयिका गरीबी और वर्ण भेद के कारण वेश्या वृत्ति की ओर कैसे अग्रसर होती है इसका चित्रण किया है। शेफाली अपनी मित्र मिला तथा सिलवी की दोस्ती से ही वेश्या बनती है। भैतिक सुख सुविधा कैसे स्वच्छंद यौनाचार को बढ़ावा देती है इसका वर्णन करते हुए उपन्यास की नायिका कहती है - "मैंने वह पहली गोली मुफ्त मे ली थी, दूसरी बार गोली मुफ्त की ही थी। हाँ तिसरी बार मैंने खरीदी थी। हमारे कॉलेज की बहुत सारी लड़कियाँ ड्रग लेती थी।"[२] विकसनशील देशों में यह समस्या नारी जगत में तेजी से बढ़ रही है।

Scanned by CamScanner

'एक बीघा प्यार' उपन्यास में मानवीय सभ्यता का दर्शन होता है तो 'तिसरे किनारे पर' उपन्यास मे हिंदू और मुसलमानों के बीच के सदभाव को प्रस्तुत किया है। 'जम गया है सूरज' का घरमेन खेत में काम करने वाले मजदूरों के प्रति दया का भाव रखता है। उसी तरह 'लहरों की बेटी' उपन्यास की दुलारी भी दया की मूर्ति है। वह प्रत्येक जरूरतमंद की सहायता करती है। 'घर लौट चलो वैशाली' उपन्यास मे किशोर वर्ग की मानसिकता का चित्रण मिलता है। प्रस्तुत उपन्यास मे हिंदू लड़की द्वारा मुस्लीम दोस्त से विवाह उपरांत उठी समस्याओं का सामना करना, अकेलापन तथा दास्ता को झेलना और अंतः अपनी अस्मिता की रक्षा हेतु अपने मार्ग का चुनाव करने की हिम्मत रखना आदी बातों का जिक्र किया है। उपन्यास का नायक हसन अली अपनी पत्नी वैशाली को विवाह के कुछ वर्षों बाद धार्मिक पाखंडों से बांधना चाहता है। यहाँ तक कि बेटी सोनी का नाम बदल कर सलमा कर देता है। वैशाली अपनी अस्मिता को पहचानती है। इससे स्पष्ट है कि आज नारी अस्मिता का अर्थ बदल गया है। वह सिता, अनुसया, अहिल्या, नहीं बनना चाहती बल्कि वह अपने अस्तित्व के लिय लड़ना चाहती है।

प्रवासी भारतीय रचनाकारों के साहीत्य में भारतीय संस्कृति का मूल रूप यत्र-तत्र दृष्टिगत होता है। विदेशो में विस्थापित होने के बावजूद भी जीवन मूल्य और जीवन शैलीयों के टकरवों के बाद भी समन्वय की भावना उनमें प्रबल है। इस लिय लिखते हैं -

"मेरे देश के जंगल में एकही घाट पर
पनी पीते हैं हिरन और...सूअर
खेलते हैं एकही क्लब में, न्यायाधीश और जूर्म के मसिहा सतरंज के खेल
पूजारी के घर से लौट आती है वेश्या
बनकर निष्कलंकिनी साध्वी
बिल्ली शेर बन जाती है रातोरात मंत्री के घर की दहलीज लाँघ आने के बाद
मेरे देश के बाजार में बिकते हैं सुबह शाम
सच और झूठ एक ही ओर एक ही दाम।"

भारतीय संस्कृती सभी प्राणी मात्रा की मंगल कामना चाहती है -

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्त निरामय।
सर्वे भद्राणी पश्चन्तु मा करिश्चद् दुःख भागभवेत।।

अर्थात सभी सुःखी रहे सभी कल्याण के दर्शन करे और किसी को भी कोई दुःख प्राप्त न हो यही कारण हैं कि प्रवासी हिंदुस्तानी आज भी भारत की उन्नति से खुश होते हैं तथा जब कभी भारत में भूकंप, सूखा, बाढ़, अथवा अन्य कोई प्राकृतिक आपदा आती है तो मदत के लिय हमेशा तत्पर रहते हैं। अपनी भाषा और संस्कृति जो उनकी भारतीयता की अस्मिता है गर्व से उसे सुरक्षित रखते हैं।

संदर्भ :-

१) अक्षरम संगोष्ठी, अप्रैल-जून २००६, पृ.६
२) अभिमन्यू अनंत - शेफाली पृ. ५६

Scanned by CamScanner